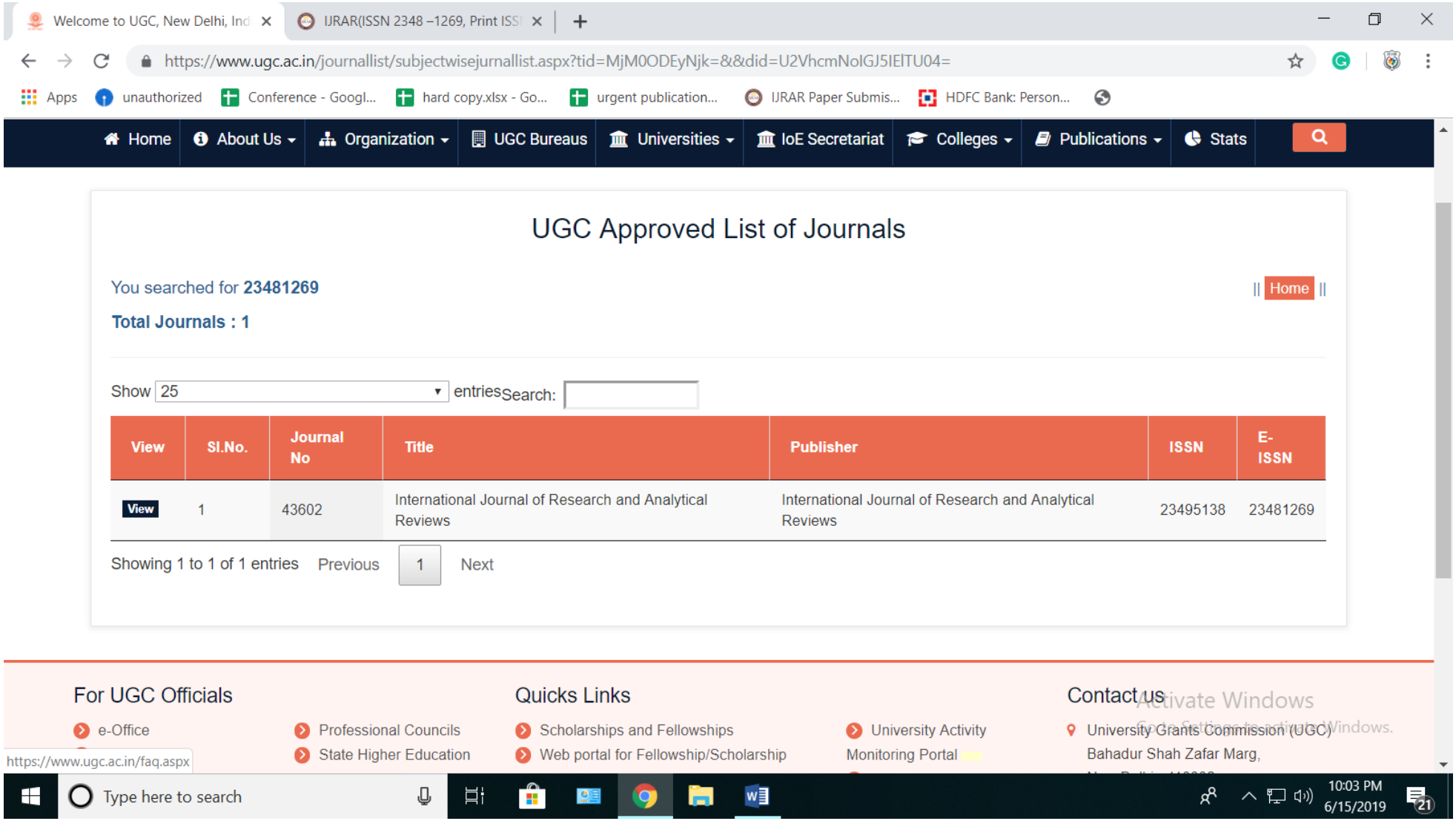
Welcome to UGC, New Delhi, Ind
IJRAR(ISSN 2348 –1269, Print ISS
https://www.ugc.ac.in/journallist/subjectwisejurnallist.aspx?tid=MjM0ODEyNjk=&&did=U2VhcmNoIGJ5IElTU04=
Apps
unauthorized
Conference - Googl...
hard copy.xlsx - Go...
urgent publication...
IJRAR Paper Submis...
HDFC Bank: Person...
Home
About Us
Organization
UGC Bureaus
Universities
IoE Secretariat
Colleges
Publications
Stats
UGC Approved List of Journals
You searched for 23481269
Total Journals : 1
Home
Show 25 entries Search:
View
Sl.No.
Journal No
Title
Publisher
ISSN
E-ISSN
View
1
43602
International Journal of Research and Analytical Reviews
International Journal of Research and Analytical Reviews
23495138
23481269
Showing 1 to 1 of 1 entries
Previous
1
Next
For UGC Officials
e-Office
Professional Councils
State Higher Education
Quicks Links
Scholarships and Fellowships
Web portal for Fellowship/Scholarship
University Activity Monitoring Portal
Contact us
University Grants Commission (UGC)
Bahadur Shah Zafar Marg,
https://www.ugc.ac.in/faq.aspx
Type here to search
10:03 PM
6/15/2019

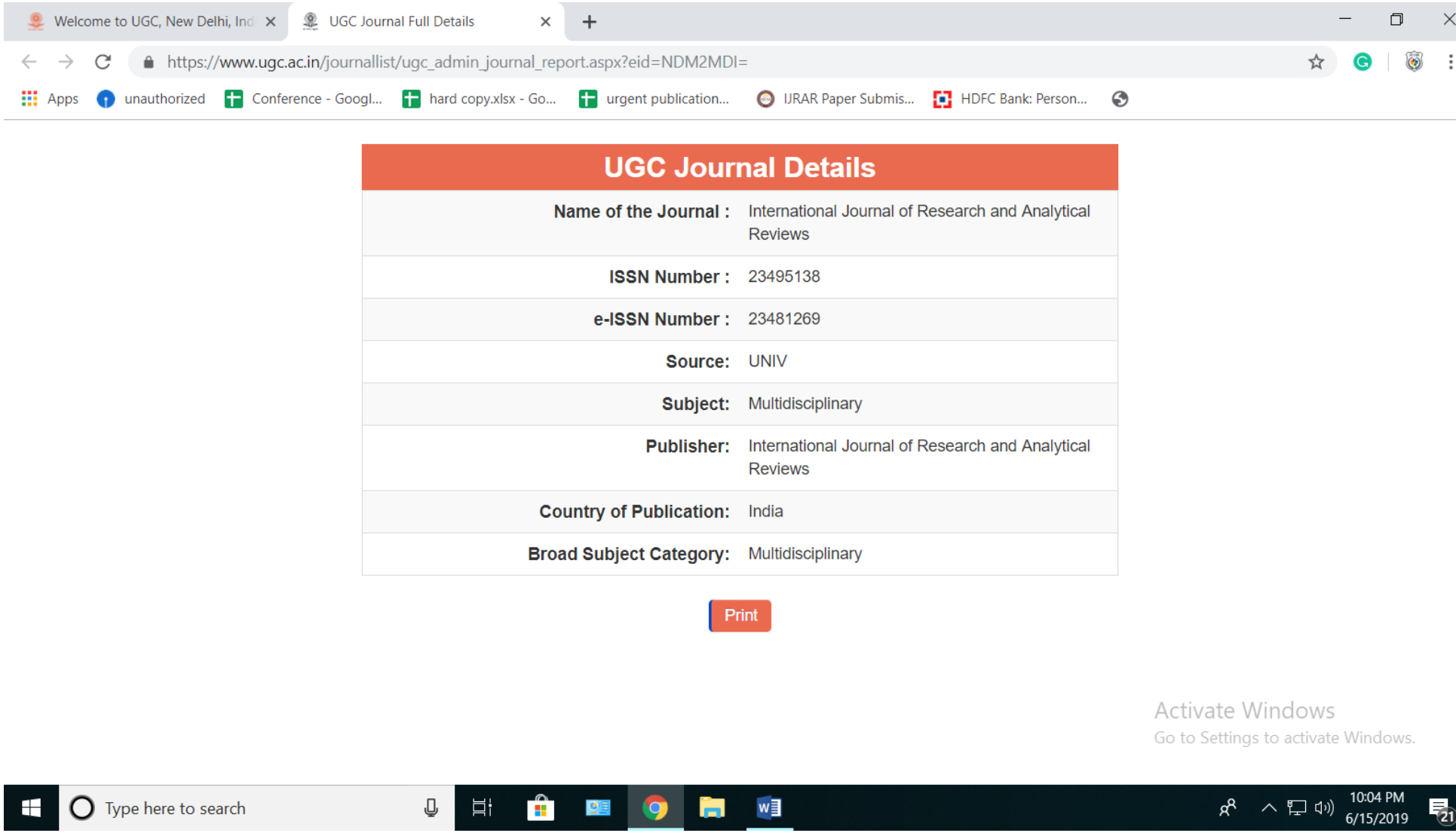
Welcome to UGC, New Delhi, Ind
UGC Journal Full Details
https://www.ugc.ac.in/journallist/ugc_admin_journal_report.aspx?eid=NDM2MDI=
Apps
unauthorized
Conference - Googl...
hard copy.xlsx - Go...
urgent publication...
IJRAR Paper Submis...
HDFC Bank: Person...
UGC Journal Details
Name of the Journal : International Journal of Research and Analytical Reviews
ISSN Number : 23495138
e-ISSN Number : 23481269
Source: UNIV
Subject: Multidisciplinary
Publisher: International Journal of Research and Analytical Reviews
Country of Publication: India
Broad Subject Category: Multidisciplinary
Print
Activate Windows
Go to Settings to activate Windows.
Type here to search
10:04 PM
6/15/2019

Hindi

WWW.IJRAR.ORG
UGC and ISSN Approved, 5.75 Impact Factor

editor@ijrar.org
UGC and ISSN Approved

An International Open Access Journal
UGC and ISSN Approved | E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS

IJRAR.ORG

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR)

International Peer Reviewed, Open Access Journal

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138 | Impact factor: 5.75 | ESTD Year: 2014

UGC and ISSN Approved and added in the UGC Approved List of Journals.

Website: www.ijrar.org

International Journal of Research and Analytical Reviews
IJRAR

Website: www.ijrar.org

IJRAR

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR)

(E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138
Impact factor: 5.75)

IJRAR www.ijrar.org

Submit Your Manuscript/Papers

To

editor@ijrar.org

Or

www.ijrar.org

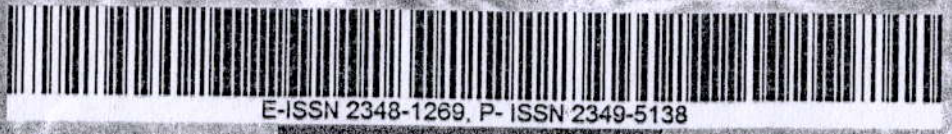

www.ijrar.org

©IJRAR, All Rights Reserved | www.ijrar.org | editor@ijrar.org

हिंदी उपन्यासो में दलित विमर्श – ' वनतरी' उपन्यास के संदर्भ में

प्रा. श्रीमती. नंदादेवी बोरसे

कां. व्ही.एन.नाईक महाविद्यालय, नाशिक

दलित साहित्य वेदना और यातना का साहित्य है। दलित साहित्यिक अपनी रचना में अपने अनुभवों सहित स्वत को प्रकट करने का प्रयास करता है। दलित साहित्य की निष्ठाएँ केवल अछूत आदिवासी, दुःखी, पीडित मानव समाज तक ही सीमित नहीं, बल्कि वे संपूर्ण मानव समाज के मूल्य है। अछूत दलित तथा दुःखी समाज इस साहित्य का प्राथमिक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है, क्योंकि इस समाज को आजतक कोई भी मानवीय अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए दलित साहित्य जाति व्यवस्था को नष्ट करना चाहता है, सामाजिक विषमता का निर्मूलन चाहता है।

आंचलिकता की प्रवृत्तिने विश्व साहित्य को प्रभावित किया है। देश की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विविधता के रूप में भारतीय साहित्य में उसका स्वागत एवं प्रसार विविध रूप से हुआ है। उपन्यास विधा ने इसे माटी की गंध से जोडने का प्रामाणिक और महत्वपूर्ण प्रयास किया है। आंचलिक उपन्यासोंने हिंदी साहित्य तथा भाषा को समृध्द बनाया है। अनेक अछूते अंचल एवं जनजातियों के जीवन को वाणी दी है। स्वातंत्रोत्तर भारतीय पिछडे, गॉवो का यथार्थ जीवन, नई मानसिकता, संघर्षशीलता, चेतना, टुटन, मूल्य आदि को अभिव्यक्ति दी है। इनमें भारत देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं की झाकियॉ प्राप्त होती है। इसने जीवन की ओर देखने का एक नया नजरिया विकसित किया है। कथ्य, शिल्प, शैली और भाषा के रूप में नए आयाम प्रस्तुत किए है। इसमें आम आदमी के जीवन स्पंदनों का गहराई के साथ अंकन हुआ है।

'वनतरी सुरेशचंद्र' श्रीवास्तव का जनजातिमूलक आंचलिक उपन्यास है। वैसे बिहार को लेकर अनेक आंचलिक उपन्यासों का सृजन हुआ है। उपन्यास मूलतः अभिशप्त शोषित और विस्थापन से गुजरते जनजातीय जीवन की एक करूण त्रासदी है। इसमें अनेक अछूतें संदर्भो को प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के केंद्र में पलामू जिले के होयहातु का डुमरी अंचल है। वैसे इस क्षेत्र में भुइयां, तुरी, महरा, महतो आदि जनजातियॉ भी मिलती है। किंतु लेखकने परहिया आदिवासियों तक ही अपने विवेचन को सीमित रखा है। पहाडों में जीवन यापन करनेवाली और जंगल पर निर्भर इस जनजाति का जीवन अपनी अलग पहचान कराता है। परंपरा से प्रचलित इनका स्वच्छंद जीवन नए कानुन एवं व्यवस्था से किस प्रकार अवरूद्व एवं विस्थापित हो रहा है इसका श्रीवास्तवजी ने इमानदारी से लेखन किया है। भ्रष्टाचार, शोषण, पिछडापन, विकास का खोखलापन, आतंक आदि को उपन्यास में प्रमुखता दी गयी है। यह उपन्यास वनतरी की कहानी न होकर वनतरी के बिरादरी की कहानी है। इसमें कथानक के बजाय आदिवासियों का पिछडापन, अभावग्रस्त जीवन, प्राकृतिक परिवेश, शोषण और व्यवस्थागत विसंगतियों के यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है। फिर भी मिथिल–वनतरी की प्रेम कहानी, सुकूल परहिया का स्वच्छंदी जीवन, ज़मींदार परमजीतसिंह के काले कारनामें, अधिकारीयों की कर्तव्यहीनता आदि कथाएँ इसमें मिलती है।

श्रीवास्तवजीने बुध्द परहिया के घर जन्मी वनतरी के माध्यम से कटते जंगल के साथ लुप्त होती परहिया जाति के प्रति संवेदना और उनके जीवन संघर्षो को प्रस्तुत किया है। वनतरी इस पहाडी धरती की एक ऐसी युवती है, जो मनुष्य से कम और प्रकृति से अधिक संबंध रखती है। सिस्टर मरियम्मा की मदद से वनतरी हायस्कूल तक की पढाई पूर्ण करती है। शिक्षा के कारण उसमें चेतना और अधिकारबोध विकसित होता है। साहसी और निडर वनतरी इसीके परिणामस्वरूप अन्याय तथा शोषण का विरोध करती है।

उपन्यास में अध्यापक विद्या शर्मा का शिक्षित बेटा मिथिल भी अपनी महत्वपूर्ण पहचान रखता है। उसमें अन्याय तथा शोषण विरोधी चेतना मिलती है। स्मृति के रूप में आया वनतरी का पिता बुदधू परहिया भी अपनी विशेष पहचान रखता है। अन्य आदिवासी पात्र अपनी कोई पहचान नहीं बता पाते। वे शोषण को ही अपनी नियति मानते है। राजस्व अधिकारी उमेश बाबू में कर्तव्यनिष्ठा तथा पीडितों के प्रति स्नेह पाया जाता है। लेकिन अपने सहकर्मी अधिकारी और व्यवस्थागत विसंगतियों के कारण वे आहत हो जाते है। व्यवस्था की भ्रष्ट नीति से कई बार वे नौकरी से त्यागपत्र देना चाहते है, लेकिन घर की गरीबी उन्हें ऐसा करने से रोकती है। गॉव के जमींदार ठाकूर परमजीत सिंह जमींदारी जाने के बावजूद भी पूरी तरह से अपनी सत्ता और स्थान कायम बनाए हुए है। अधिकारियों से मिलकर वे भोले गरीब आदिवासियों का अमानुष शोषण करते है। बी.डी.ओं. शमशेर सिंह, रेंजर गुप्ता, थानेदार पाठक, डॉ. घोषाल आदि सरकारी अधिकारियों में कर्तव्य, निष्ठा, सेवा तथा मानवीय संवेदना का पूर्णतः अभाव पाया जाता है। वे भ्रष्टाचार के माध्यम से पैसा कमाना चाहते है। सिस्टर मरियम्मा अपनी निजी कमजोरियों के बावजूद सेवाभावी नारी के रूप में नजर आती है तो नर्स माया के रूप में यौनासक्त नारी का चित्रण हुआ है। उपन्यास के पात्र यथार्थ के धरातल पर खडे है। इस प्रकार पात्रो का चरित्र–चित्रण श्रीवास्तवजीने सफलतापूर्वक किया है।

वनतरी उपन्यास में शोषण और व्यवस्थागत विसंगतियों का चित्रण अत्यंत सूक्ष्मता तथा विस्तार से हुआ है। डुमरी अंचल ठाकूर परमजीत सिंह के अन्याय और अत्याचार से आंतकित है। जमींदार एवं उनके साथियों से आदिवासी नारी अत्यंत शोषित पाई जाती है। ठाकूर के साथ ही लकडी के व्यापार हेतु आए व्यापारी और ठेकेदार भी गॉव की नारियों का यौन शोषण करते है। ठाकुर मिथिल की जमीन हडपने के लिए बिनेसर हरिजन का हथियार के रूप में. प्रयोग करता है। वह भूमिहिनों के जरिए अनेक सरकारी सुविधाऐं भी हडपता है। थाना, अदालत सभी पर ठाकुर का राज है। अपने वर्चस्व से वह चोरी, मारपीट, डकैती, हत्या सबकुछ करता है। हरिजनों को जमीन से बेदखल करना, बैल–बकरी उडाना, राशन से हप्ता, जबरदस्ती टॅक्स वसूलना आदि धंदे वह करता है। सुकूल जैसे भोले और अज्ञानी आदिवासी को ऋणग्रस्त बनाकर बंधूआ बनाने का प्रयास किया जाता है। शोषण का जो भयावह चित्रण उपन्यास में मिलता है, वह बिहार के गॉवो का यथार्थ है। बिहार की भ्रष्ट व्यवस्था को श्रीवास्तवजीने पूरी तरह बेनकाब किया है। पौष्टिक आहार केंद्र से बच्चे तो पुष्ट नहीं होते लेकिन संचालक और निरीक्षक मोटे होते है। यहॉ की अनुशासनहीनता तथा गैरजिम्मेदारी को देखकर उमेश बाबु सोचते है " अगर एक बार गांधीजी को प्रशासन चलाने का मौका दिया जाता तो नाथु को उन्हें मारने की जरूरत ही नहीं पडती। वे खुद ही आत्महत्या कर लेते। ऐसी ही कुव्यवस्था और भ्रष्टाचार चारों और फैला था।" डॉ.घोषाल जैसे डॉक्टर सरकारी अस्पताल की दवाओं को बाजार में बेचकर रूपए कमाते है। उमेश बाबु जैसे ईमानदारी अधिकारियों को प्रशंसा या पुरस्कार मिलना तो दूर बाल्कि निलंबित होना पडता है। भ्रष्टाचार करनेवालों को पदोन्नति मिलती है।

पूरा अंचल ठाकुर के शोषण को नियति मानकर चुपचाप सहते है। लेकिन वनतरी और मिथिल उसका विरोध करते है। वनतरी में साहस, संघर्षप्रियता, अन्याय विरूध्द लडना तथा अधिकारबोध की सही समझ है। साहु जब दुगुने दाम से केरोसीन बेचता है, तो वनतरी उसका जबाब मॉगती है। इस पर साहू जब बदतमीजी से पेश आता है, तो वनतरी उसे खुलेआम थप्पड मारती है। वनतरी की बिरादरी मिथिल और उसके संबंधोपर आपत्ति उठाती है तब वनतरी पंचायत का भी विरोध करती है और खुलेआम अपने संबंधो को स्वीकार करती है। वनतरी के माध्यम से श्रीवास्तवजीने एक आदिवासी युवती के विद्रोह को प्रस्तुत किया है। आदिवासीयों की समस्याओं के भीतर तक पहूँचकर उनकी अस्मिता को स्पर्श करने का सफल प्रयास किया है। इसमें शोषण तथा विस्थापित जनजातीय जीवन को प्रमुखता मिली है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि, आज दलित साहित्य अनेक दृष्टियों से समृध्द हो रहा है। उसके विविध रूप अब प्रकट होने लगे है। आदिवासी तथा घुमंतू जातियों में भी दलित साहित्य की रचना होने लगी है। सभी रचनाकर अपने आत्मानुभवों की प्रेरणा से साहित्य सृजन करने लगे है। जब उन्हें अपनी सामाजिक अस्मिता का असली स्वरूप ज्ञात होगा, तब दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य का रूप अधिक निखरकर सामने आएगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. वनतरी, सुरेश श्रीवास्तव
2. स्वातंत्रोत्तर उपन्यास साहित्य की सामाजिक चिन्ता – डॉ. कुसुम राय
3. हिंदी के आंचलिक उपन्यासों का लोकतात्विक विमर्श – डॉ. उषा डोगरा
4. उपन्यास का पुर्नजन्म – डॉ. परमानंद श्रीवास्तव
5. उत्तरशती के उपन्यासों में दलित विमर्श – डॉ. विजयकुमार शेडे